Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political Science
V.S.S. College, Rajnagar, Madhubani, Bihar

Class - BA - I (H)

Paper - II

Topic - कौटिल्य (राज्य की उत्पत्ति)

अर्थशास्त्र के प्रथम अधिकरण में कौटिल्य ने राज्य की उत्पत्ति की चर्चा की है। उन्होंने यह विमर्श प्रत्यक्ष रूप से नहीं करके बल्कि दो गुप्तचरों के मध्य आपसी संवाद के माध्यम से किया है। प्रथम गुप्तचर राजा के दोषों की चर्चा करता है जिसके उत्तर में दूसरा गुप्तचर राजा से प्राप्त होने वाले लाभों की चर्चा करता है। इस प्रकार वाद-विवाद के माध्यम से वे राज्य की उत्पत्ति, राज्य के दिये जाने वाले कर तथा राजा के प्रति आज्ञाकारिता आदि विषयों की चर्चा करते हैं। राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कौटिल्य का मत इस विषय पर 'महाभारत' तथा 'मनुस्मृति' में वर्णित विचारों से काफी हीमा तक समान है। कौटिल्य के अनुसार आदिकाल में कोई राजा नहीं था अर्थात् संसार में 'मत्स्यन्याय' की सी स्थिति थी। इस अवस्था में 'शक्ति ही अधिकार है' का सिद्धान्त लागू था, जिसमें बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती थी।

इस अराजक अवस्था से निकलने के लिए लोगों ने वैवस्वत मनु को अपना राजा चुना। उन्होंने राजा द्वारा दी जाने वाली कुछ तथा कल्याण सम्बन्धी कार्यों के

Scanned with CamScanner

बदले में अपनी उपज का छठा भाग तथा व्यापार में हुए लाभ तथा स्वर्ण का दसवाँ भाग कर के रूप में देना स्वीकार किया। यहाँ तक कि वानप्रस्थ आश्रम में जीवन व्यतीत कर रहे लोगों ने भी राजा को अपने हिस्से की उपज का छठा भाग कर के रूप में देने की बात स्वीकार कर ली। यह एक प्रकार का सामाजिक अनुबंध था।

कौटिल्य के अनुसार - क्योंकि यह अनुबंध जनता और राजा के बीच हुआ था। अतः दोनों में से जो इसका उल्लंघन करेगा वह अनुबंध तोड़ने का दोषी होगा। इसके अतिरिक्त कौटिल्य ने राजा को जनता का सेवक कहा है जिसका भरण-पोषण जनता द्वारा दिये गये कर्य से होता है। इस बात की चर्चा कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में एक अन्य स्थान (अधिकरण 10, अध्याय 3, श्लोक 27) में भी की है जब राजा युद्ध से पूर्व अपने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहता है - "मैं भी तुम्हारी तरह ही अपनी सेवा के बदले पारिश्रमिक प्राप्त करता हूँ।" इस प्रकार कौटिल्य का सामाजिक अनुबंध अंग्रेज विचारक जॉन लॉक के सिद्धान्त के बहुत कुछ समान है

Khushbu Kumari
19th Sept. 2020

Scanned with CamScanner